International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(IV), January - March, 2024, pp. 128-131

19वीं सदी में सांभर का सामाजिक–आर्थिक अध्ययनः एक ऐतिहासिक अवलोकन

मुकेश कुमारी*

प्रस्तावना

राजस्थान शब्द का पहली बार प्रयोग प्रदेश के रूप में प्रयुक्त करने का श्रेय इतिहासकार जेम्स टॉड को जाता है। इस प्रदेश में राजपूत राजाओं की रियासतें होने से अंग्रेज शासकों ने इसे राजपूताना नाम दे दिया जो राजस्थान का उपभ्रंश है। प्रायः लोग समझते है कि तत्कालीन जोधपुर व जयपुर राज्यों की सीमाओं के इसी स्थान पर मिलने के कारण या इसके दोनों राज्यों के बीच स्थित होने के कारण यह क्षेत्र सांभर शामलता कहलाता है। परन्तु वास्तव में इसकी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है कि इस स्थान पर आज से लगभग 313 वर्ष पूर्व एक युद्ध हुआ जिसमें जयपुर व जोधपुर की सम्मिलित सेनाओं द्वारा 1709 में अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह को हराकर सांभर पर इन दोनों राज्यों द्वारा सम्मिलित प्रशासनिक आधिपत्य स्थापित कर लिया गया। सांभर शामलता पर इन दोनों सरकारों का यह आधिपत्य जब तक बना रहा, तब तक कि ब्रिटिश सरकार द्वारा विभिन्न संधियों के तहत् इस पर सर्वोच्च सत्ता कायम ना की गई।

महाभारत महाकाव्य के अनुसार सांभर का क्षेत्र असुरराज वृषपर्व के साम्राज्य का एक हिस्सा था और यहाँ असुरों के कुलगुरू शुक्राचार्य निवास करते थे। इसी स्थान पर शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का विवाह, भारतवर्ष के राजा ययाति के साथ संपन्न हुआ । यहाँ देवयानी को समर्पित लगभग 5000 ई0पू0 प्राचीन मंदिर झील के पास स्थित है। यहाँ उपस्थित देवयानी कुंड भी इसका वर्णन करता है। भागवत पुराण के नवें भाग में अध्याय 18 एवं 19 में भी देवयानी की कहानी का वर्णन मिलता है जो कि इसकी प्राचीनता एवं ऐतिहासिकता को दर्शाता है। एक अन्य हिन्दू मान्यता के अनुसार शाकंभरी देवी जो कि चौहान राजपूतों की रक्षक एवं कुलदेवी है, ने यहाँ के वन को बहुमूल्य धातुओं के एक मैदान में परिवर्तित कर दिया था। लोग इस संपदा को लेकर होने वाले झगड़ों को लेकर चिंतित हो गए और इसे एक वरदान के स्थान पर श्राप समझकर देवी से इस वरदान को वापिस लेने की प्रार्थना की। देवी ने इस सारी चाँदी को नमक में परिवर्तित कर दिया। यहाँ पर शाकंभरी देवी को समर्पित एक मंदिर भी उपस्थित है। सांभर चौहानों की प्रथम राजधानी थी और उनका राज्य इसके आस–पास ही फैला हुआ था। इसमें लगभग 1,25,000 छोटे एवं बड़े गाँव थे, इसलिए यह राज्य सपादलक्ष कहलाता था। राजपूत चौहानों द्वारा कालांतर में अजमेर को उपयुक्त एवं सुरक्षित और स्वास्थ्य प्रद समझकर अपनी राजधानी बनाया गया, उसके पश्चात् भी वे शाकंभरी देवी को अपनी कुल देवी मानते रहे। यहां उपस्थित शाकंभरी देवी मन्दिर, शर्मिष्ठा सरोवर, देवीयानी कुण्ड जैस पवित्र स्थल सांभर की धार्मिक स्थिति का उल्लेख करते हैं। सांभर में शिवरात्रि के

* शोधार्थी, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान।

अवसर पर नन्दकक्ष्वर महादेव के मेले का आयोजन किया जाता है जो कि उस क्षेत्र का प्रसिद्ध मेला कहलाता है। इस मेले में नन्दकक्ष्वर बाबा की सवारी निकाली जाती है। इसे सांभर होली महोत्सव के नाम से मनाया जाता है। शाकंभरी माता का मेला नवरात्रों के अवसर पर आयोजित होने वाला प्रसिद्ध शक्तिपीठ मेला है, जिसमें शाकंभरी माता का नौ दिनों तक श्रृंगार एवं आरती का आयोजन किया जाता है। इस समय गाया जाने वाला प्रसिद्ध लोक गीत इस प्रकार हैः–

''बाजरिया मंदिर बाजा, आजा म्हारी शाकम्भर आजा''।

चौहानों का दूसरा नाम सँभर है, जो कि साँभर का अपभ्रंश है। सांभर को अनेक राजपूत मुस्लिम युद्वों का सामना करना पड़ा। मोहम्मद गौरी द्वारा 1192 में तराईन के दुसरे युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराकर चौहानों की रियासतों का अधिग्रहण किया गया । इस प्रकार अजमेर तथा आस–पास का क्षेत्र मुस्लिम आक्रांताओं के अधिकार में आने से सांभर पर भी मुस्लिम सत्ता कायम हो गई। अकबर के समय में एक व्यवस्थित शासन व्यवस्था के तहत् सांभर का आर्थिक महत्व बढ़ गया। अकबर ने राजस्थान को अपने साम्राज्य का एक सूबा बनाया और अजमेर को प्रांतीय राजधानी बनाया। अकबर के समय सांभर से लगभग 2–1/2 लाख राजस्व प्रतिवर्ष प्राप्त होता था, जो धीरे–धीरे बढ़कर औरंगजेब के काल तक 15 लाख तक पहुँच गया।

सांभर भौगोलिक दृष्टि से अरावली में मध्य करीब 15–20 कि0मी0 चौड़े प्राकृतिक रास्ते पर स्थित है। साथ ही सामान्य धरातल से भी ऊँचाई काफी कम है। ब्रिटिशकाल में निर्मित कारागृह, रिकार्ड ऑफिस, सांभर डाक बंगला (1880) जिसमें हस्तचलित डम्प वेटर नामक लिफ्ट, 1881 में बना साल्ट म्यूजियम एवं फैक्ट्री उस समय की प्रशासनिक व्यवस्था को वर्णित करते है, जिनके अवशेष एवं इमारतें वर्तमान में भी संरक्षित है

सांभर में स्थित बन्जारों की छतरियां उस समय की उनकी शान–शौकत एवं वैभवशाली जीवनशैली एवं आर्थिक स्थिति को निरूपित करती है। सांभर के प्राचीन अवशेष एवं अधीक्षक न्यायालय भी वहां की प्राचीनता को दर्शाते हैं। सांभर का जो नमक केवल बंजारों के बैल ही अपनी पीठ पर लादकर दूर–दूर विनियम के आधार पर बेचते थे, उसमें 19 वीं शताब्दी में एकाएक परिवर्तन आ गया और रेलगाड़ी से उत्तरी भारत के सभी रियासतों में सांभर का नमक सुगमता से पहुँचने लगा। सन् 1890 में प्रथम बार सांभर मे डाकघर की सुविधाऐं आरम्भ की गई। जिससे नमक के व्यापारियों को पैसा जमा कराने , पैसा भेजने तथा विचारों का आदान–प्रदान करने का अवसर मिलने लगा।

सांभर जयपुर जिले में स्थित है। यह जयपुर से लगभग 65 कि.मी. पश्चिम में स्थित भारत की खारे पानी की प्रमुख सांभर झील के पास बसा हुआ है। यहाँ पर नमक का उत्पादन किया जाता है। समुद्री नमक उत्पादन के अतिरिक्त सांभर में ही सबसे अधिक नमक का उत्पादन होता है। झील का कुल क्षेत्रफल लगभग 150 कि.मी. है तथा इसका जलग्रहण क्षेत्र 2500 कि.मी. में फैला है। यह झील नमक उत्पादन में राजस्थान की सबसे बड़ी झील है। इसमें चार प्रमुख नदियाँ जल धाराओं के रूप में नमक के क्रिस्टल बहाकर लाती हैं–रूपनगढ़,मेंथा,खारी और खंडेला। ये नदियाँ वर्षाकाल में इस झील को जल से भर देती हैं। वर्तमान में यह झील यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है।

ब्रिटिश सरकार ने यहाँ 1839 में डाकतार सुविधा की स्थापना एवं 1875 में रेलवे की स्थापना कर इस स्थान को अपने आर्थिक हितों की पूर्ति के लिये प्रयुक्त करने का प्रयास किया यह स्थान मुख्य रेलवे लाईन से जुड़ा होने के कारण नमक को उनकी मंडियों तथा देश के कोने–कोने में पहुँचाने वाला कस्बा बना। 1937 ईस्वीं में दयाराम शाहनी के नेतृत्व में सांभर के नजदीक स्थित नलियासर पुरातात्विक स्थल की खुदाई से प्राप्त विभिन्न यूपयुक्त मूर्तियों एवं उपकरणों के अध्ययन द्वारा वहॉ की धार्मिक स्थिति एवं सभ्यता के विकास के विभिन्न चरणों की जानकारी प्राप्त होती है।

19वीं सदी में राजस्थान की भौगोलिक स्थिति
(प्रमुख पुरातात्विक स्थल)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भट्टाचार्य, सुकुमार, दी राजपूत स्टेट्स एण्ड दी ईस्ट इण्डिया कम्पनी 1972 दिल्ली
2. जैन, के0 सी0 एनिसिंएट सिटिज एंड टाऊन्स ऑफ राजस्थान 1972 दिल्ली
3. माथुर, हरिमोहन, राजस्थान का औद्योगिक विकास 1973 जयपुर
4. श्रीवास्तव, साहबसिंह, फॉक कल्चर एंड ऑरल ट्रेडिशन, (ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ रीजन इन राजस्थान एंड इर्स्ट्रन यू0पी0), 1974, दिल्ली
5. भट्टाचार्य, सब्यसाची, ब्रिटिश राज के वित्तीय आधार, 1976, दिल्ली
6. गहलोत,सुखवीर सिंह,राजस्थान का इतिहास, 1980, जोधपुर
7. पानगड़िया,बी0एल0,राजस्थान का इतिहास(प्राचीन से 1956 तक), 1982 दिल्ली
8. बंसल रतनलाल, चौहान वंश का सामाजिक एवं राजनीतिक इतिहास 1989, दिल्ली
9. चौहान, विंध्यराज, चौहान राजवंश के उद्भव का वृहद इतिहास, 2001, जोधपुर
10. हबीब, इरफान, इंडियन इकोनोमी (1857–1914), 2006, दिल्ली
11. पुरोहित, अनिल, राजस्थान में व्यापार – वाणिज्य, 2013, जयपुर
12. शारदा, हरबिलास, अजमेर–हिस्ट्रोरिकल एवं डिस्क्रिप्टिव, 1911, स्कॉटिश मिशन अजमेर
13. अग्रवाल, एस0सी0, दि साल्ट इंडस्ट्री इन इंडिया 1937(1956) दिल्ली
14. शाहनी, दयाराम, आर्कियोलोजिकल रिमेंस एंड एक्सकवेशन्स एट सांभर 1937, दिल्ली
15. शर्मा, दशरथ, दि अर्ली चौहान डायनेस्टी 1959, जयपुर
16. टॉड, जेम्स, बूलियन क्रूक, एनल्स एण्ड एन्टीक्यूटीज ऑफ राजस्थान 1971,दिल्ली।
17. बनर्जी,ए0सी0, द राजपूत स्टेट्स एण्ड ब्रिटिश पैरामाऊंटेसी 1980 दिल्ली
18. सोमानी, रामवल्लभ, पृथ्वीराज चौहान 'एंड हिज टाइम्स, 1981 दिल्ली
19. बैली सी.ए. रुलर्स टाऊन्स एण्ड बाजार्स (1770–1870), 1983, दिल्ली
20. गुप्ता, बी, एल, ट्रेड एंड कॉमर्स इन राजस्थान ,1987, जयपुर
21. कोमिन, एफ0ए0,नॉर्थकोट, टी0जी0 सेलाइन लेक्स IV 1988,(1990) दिल्ली
22. शर्मा, गोपीनाथ, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, 1989, (1995,1997,98, 99) राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
23. प्रजापत, संदीप, मध्यकाली न राजस्थान के धार्मिक स्थल, 2017, रॉयल पब्लिकेशन, जयपुर।

❖◆❖